आदि जैसे मानव नियंत्रण के बाहर के कारणों की वजह से भण्डारण, परिवहन और बहु-हैंडलिंग के दौरान खाद्यान्नों का कुछ स्टाक क्षतिग्रस्त हो जाता है। पिछले तीन वर्षों के दौरान भारतीय खाद्य निगम, जोकि सरकारी स्टाक को हैंडल कर रही प्रमुख एजेंसी है, के पास पड़े हुए ऐसे क्षतिग्रस्त खाद्यान्नों का ब्यौरा नीचे दिया जाता है :—

वर्ष	भारतीय खाद्य निगम द्वारा खाद्यान्नों का रखा गया औसत स्टाक (लाख मीटरी टन में)	ठोस से क्षतिग्रस्त अनाज में हस्तांतरित खाद्यान्नों की मात्रा (लाख मीटरी टन में)	औसत के प्रति क्षति की प्रतिशतता
1984–85 . . .	163.15	0.65	.49
1985–86 . . .	176.47	.87	0.49
1986–87 . . .	169.91	1.08	0.64
1987–88 . . .	लेखों को अभी अंतिम रूप दिया जाना है।		

(ग) और (घ) खाद्य विभाग को ऐसे किसी समाचार की जानकारी नहीं है।

जनसंख्या के अनुपात से खाद्यान्न का उत्पादन

1313. **श्री शरद यादव**: क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) गत तीन वर्षों के दौरान खाद्यान्न का कितना-कितना उत्पादन हुआ ;

(ख) क्या यह सच है कि 1990 तक भारत की जनसंख्या के अनुपात में खाद्यान्न का उत्पादन कम होने की संभावना है; और

(ग) यदि हां, तो सरकार द्वारा इस दिशा में किए जा रहे प्रयासों का ब्यौरा क्या है ?

कृषि मंत्रालय में कृषि और सहकारिता विभाग में राज्य मंत्री (श्री श्याम लाल यादव) : (क) पिछले तीन वर्षों के दौरान खाद्यान्न उत्पादन के अखिल-भारत अनुमान इस प्रकार हैं :—

वर्ष	उत्पादन (दस लाख मीटरी टन में)
1985–86 . . .	150.4
1986–87 . . .	144.1
1987–88 . . . (अंतरिम)	137.0

(ख) जी नहीं।

(ग) प्रश्न ही नहीं होता।

Applications pending for registration before CIB

1314. SHRI ASHOK NATH VERMA: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

(a) the number of applications pending before the Registration Committee of CIB for grant of registration under section 9(3) and 9(3B) of the Insecticides Act and since when; and